

Report on a Workshop on

“Approaches to Honey Bee Production Techniques”

Conducted by Dept. of Rural Technology & Social Development and Skill
Development Cell, GGV, Bilaspur

Date of Event : 7th March 2025

Venue : Department of Rural Technology & Social Development



स्वावलम्बी छत्तीसगढ़ योजना के अंतर्गत
कौशल विकास कार्यशाला
Subject - “Approaches to Honey Bee Production Techniques”
Date - 7th March 2025

Prof. R. Mehta
Head, Dept. of Rural Technology
& Dean, SoS IIR
G.G.V., Bilaspur (C.G.)

Prof. Harish Jha
Nodal Officer
Swavalambi Chhattisgarhi Scheme
G.G.V., Bilaspur (C.G.)

Prof. Alok Kumar Chakrawal
Vice - Chancellor
G.G.V., Bilaspur (C.G.)

Prof. S.C. Srivastava
Nodal Officer, Skill Development Cell
G.G.V., Bilaspur (C.G.)

Dr. Dilip Kumar
Organizing Secretary
School Coordinator of the S. D. C.
G.G.V., Bilaspur (C.G.)

Organized by - Skill Development Cell & Department of Rural Technology and Social Development, G.G.V. Bilaspur (C.G.)

Details of Event Proceedings

Date (DD-MM-YYYY)	Details of the Session	Details of Resource Person	Number of Participants
7 th March 2025	“Approaches to Honey Bee Production Techniques”	Dean Professor R.Mehta, Nodal Officer Professor S.C. Shrivastava Convener Dr. Dilip Kumar Organizing Secretaries Dr. Devendra Singh Porte	57



A Brief Abstract

Dr. Dilip Kumar conducted this workshop very successfully.

Workshop Report on Approaches to Honey Bee Production Techniques

Introduction

The workshop on "Approaches to Honey Bee Production Techniques" was held on 7th March 2025 under the guidance of Dr. Dilip Kumar. The primary objective of the workshop was to educate students about modern and traditional beekeeping methods, hive management, and honey production techniques. The event brought together 57 enthusiastic participants who were eager to gain hands-on experience in apiculture.

Workshop Agenda

The workshop was structured into multiple sessions, covering the following topics:

1. Introduction to Apiculture – Importance of beekeeping in sustainable agriculture and rural livelihoods.
2. Types of Honey Bee Species – Discussion on various species, including *Apis dorsata*, *Apis mellifera*, and *Apis cerana indica*.
3. Beehive Management – Techniques for hive construction, maintenance, and protection from pests.
4. Honey Extraction Techniques – Traditional vs. modern methods of honey extraction and processing.
5. Marketing and Value Addition – Strategies for branding and selling honey and other bee products.

Key Takeaways

- Beekeeping is a profitable and sustainable livelihood option for rural communities.
- Proper hive management leads to increased honey production and improved bee health.
- Modern extraction methods ensure better quality and higher yield.
- Marketing and value addition play a crucial role in enhancing the economic benefits of apiculture.

Hands-on Demonstrations

The participants were given practical exposure to:

- Handling beehives safely

- Identifying different stages of bee development
- Extracting honey using a centrifugal honey extractor
- Processing and packaging honey for sale

Feedback and Conclusion

The workshop was highly appreciated by the participants. Many expressed interest in starting small-scale beekeeping ventures. The interactive nature of the sessions and practical demonstrations contributed significantly to the learning experience. Dr. Dilip Kumar concluded the workshop by encouraging students to explore beekeeping as an entrepreneurial opportunity and emphasized the importance of sustainable beekeeping practices.

Acknowledgments: We extend our gratitude to all the participants, speakers, and organizers for their valuable contributions. Special thanks to **Professor Alok Kumar Chakrawal** for their support in making this event a success.





स्वावलंबी योजना

ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग के विद्यार्थियों को मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण

सीयू के विद्यार्थी पढ़ाई के साथ सीख रहे कमाई का जरिया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बिलासपुर. गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, शहर के ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक विकास विभाग के अंतर्गत स्वावलंबी छात्रोत्पन्न योजना के तहत बीएससी द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया है। इस पहल के माध्यम से छात्र-छात्राएं न केवल अपनी पढ़ाई कर रहे हैं, बल्कि आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम भी बढ़ा रहे हैं और आय के नए स्रोतों की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं। मधुमक्खी पालन एक महत्वपूर्ण कृषि गतिविधि है, जिससे न केवल शहद का उत्पादन होता है, बल्कि यह फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक होता है और अन्य कई फायदे भी मिलते हैं।



एक बॉक्स से 50 किलो तक शहद का उत्पादन

डॉ. दिलीप कुमार के अनुसार, विश्वविद्यालय में एपिस मेलीफेरा प्रजाति की मधुमक्खियों का पालन किया जा रहा है, जो एक बॉक्स से लगभग 50 किलो तक शहद का उत्पादन करती हैं। यह परियोजना न केवल शहद उत्पादन में सहायक होगी, बल्कि मधुमक्खी बायोडायवर्सिटी को संरक्षित रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। विद्यार्थियों ने गर्मी के मौसम में मधुमक्खियों के लिए सूरजमुखी के पौधे लगाए हैं, ताकि उन्हें पर्याप्त पराग मिल सके। इसके अलावा, समय-समय पर मधुमक्खियों को शक्कर का घोल भी दिया जाता है, जिससे उनका स्वास्थ्य बेहतर रहता है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

65 विद्यार्थी शामिल

कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल के मार्गदर्शन में इस योजना के तहत विद्यार्थियों को मधुमक्खी पालन के साथ-साथ इसके विभिन्न व्यावसायिक पहलुओं की जानकारी भी मिल रही है। इस परियोजना का संचालन ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक विकास विभाग के सहायक अध्यापक डॉ. दिलीप कुमार के निर्देशन में किया जा रहा है। कुल 65 बीएससी द्वितीय वर्ष के छात्रों ने इस योजना में भाग लिया है।

उत्पादन और मार्केटिंग की भी दी जानकारी

विद्यार्थियों को कृषि वैज्ञानिक विजय कुमार और कोरिया एगो प्रोड्यूस कंपनी के निदेशक डॉ. फैयाज अलम द्वारा मधुमक्खी पालन, शहद के उत्पादन और विपणन के बारे में प्रशिक्षण दिया गया है। उन्होंने छात्रों को यह भी बताया कि शहद को बाजार में कैसे बेचा जाता है और इसके व्यापारिक पहलुओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

ढाई लाख तक की आय की संभावना

अब तक विश्वविद्यालय में 10 बॉक्सों के माध्यम से मधुमक्खी पालन की योजना बनाई गई है, और एक बॉक्स से लगभग 50 किलो शहद उत्पादन होने की संभावना है। शहद की बाजार कीमत 500 रुपये प्रति किलो है, तो इस योजना से प्रति बॉक्स 2.5 हजार रुपये की आय होने की संभावना है। इस प्रकार, इस योजना में शामिल कुल 10 बॉक्सों से ढाई लाख रुपये तक की आय हो सकती है।

